१

शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

foKfl r

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २१ : अंक १२ : नई दिल्ली : १६-२५ जून २०१५

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण एवं महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणी नेपाल के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण करते हुए १६ जून को राजविराज पधार गए हैं। यहां पूज्यवर का साप्ताहिक प्रवास निर्धारित है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यवर ११ जुलाई को भारत के बिहार राज्य में स्थित फारविसगंज पधार जाएंगे। वहां दस दिवसीय प्रवास पूर्व निर्णीत है। २२ जुलाई को पूज्यवर भारत से पुनः नेपाल में पधारेंगे और उसी दिन विराटनगर में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश होगा, ऐसी संभावना है। विराटनगर के लोग चातुर्मासिक व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने में निष्ठा के साथ जुटे हुए हैं। सन् २०१८ के चतुर्मास की घोषणा के लिए आचार्यवर ने ३१ जुलाई का दिन निर्धारित किया है। दक्षिण भारत, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के श्रद्धालुओं के साथ पूरे धर्मसंघ की उत्सुकता भरी नजरें इस घोषणा पर टिकी हुई है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण विराटनगर की ओर

जनकपुर से पावन प्रस्थान

६ जून। परम पावन आचार्यवर जनकपुर का चार दिवसीय प्रवास परिसंपन्न कर प्रातः मिथलेश्वर, मौवाही की ओर प्रस्थित हुए। इस अवसर पर जैन एवं जैनेतर, समाज के सैंकड़ों लोग पूज्यप्रवर को पहुंचाने उपस्थित थे। धनुषा जिला के मुख्य जिलाधिकारी श्री कृष्णप्रसाद ढुंगाना एक भक्त की भांति गत कई दिनों से पूज्यवर की उपासना में लगे हुए थे। जैन ध्वज को थामे वे पूज्यवर के आगे-आगे करीब दो किमी तक चले। सहायक उपनिरीक्षक श्री ए एस यादव ने अपनी सीमा समाप्ति पर पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित करते हुए विदा ली। मार्गवर्ती बेगा पिपराय, थुंभाना, कंचूरी और तारापट्टी के कई ग्रामीणों ने आचार्यवर की पावन प्रेरणा से प्रभावित होकर नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। श्री मिथिला राजकीय विद्यालय कंचूरी के विद्यार्थियों को भी पूज्यवर से पावन संबोध प्राप्त हुआ। सम्मुखीन सूर्य कुछ प्रचण्ड रूप धारण किए हुए था, किन्तु गन्तव्य के प्रतिकूल दिशा में बहती हुई हवा उसके आतप को मन्द बनाने का सफल प्रयास कर रही थी।

ग्रामीणों के अनुरोध पर पूज्यप्रवर कंचूरी गांव में मार्ग से कुछ भीतर स्थित श्री मिथिला विहार मानष आराधना मंदिर परिसर में पधारे। बताया गया कि श्रीराम-सीता के इस मंदिर से प्रतिवर्ष फाल्गुन माह में पन्द्रह दिवसीय परिक्रमा प्रारंभ होती है। 'मिथिला मध्यम परिक्रमा' से अभिहित इस उपक्रम में प्रतिवर्ष करीब आठ-दस लाख व्यक्ति संभागी बनते हैं। १३.१ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर मिथलेश्वर मौवाही पधारे। श्री माध्यमिक विद्यालय में आज का प्रवास रहा। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री लक्ष्येश्वर मंडल ने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमपूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा–'दो प्रकार की वृत्तियां होती हैं–श्वानी वृत्ति और सैंही वृत्ति। ऊपरी भाग को देखना श्वानी वृत्ति है और मूल को देखना सैंही वृत्ति है। दुःख मुक्ति के लिए उसके मूल को समझकर उन्मूलित करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी के जीवन में दुःख आता है। दुःख ऊपरी है। उसका मूल राग-द्वेष है। राग के समान दुःख और

त्याग के समान सुख नहीं है। मन राग-द्वेष मुक्त रहे, ऐसा प्रयास वांछनीय है। मन के कहे अच्छा काम भले ही कर लें, पर बुरा काम नहीं करना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा–'आदमी अपने जीवन को उन्नत और गुणसम्पन्न बनाने का प्रयास करे, यह काम्य है। उसके लिए खान-पान की शुद्धि रखनी चाहिए। अण्डा, मांस आदि के परिहार का प्रयास करना चाहिए। शाकाहार से काम चल जाता है तो सूअर, भैंसे, मुर्गे, मछली आदि का वध करके मांसाहार क्यों करना चाहिए। मनुष्य की तरह अन्य प्राणियों को भी छेदन-भेदन से कष्ट होता है। जैन धर्म में तो लहसुन, प्याज आदि जमीकंद में भी अनन्त-अनन्त जीव माने गए हैं। सम्भव हो तो इनके भी परिहार का प्रयास करना चाहिए। आदमी का मन अच्छे संकल्पों वाला होना चाहिए। अच्छे संकल्पों को स्वीकार कर उनका दृढ़ता से पालन करना चाहिए। अच्छे संकल्पों से अच्छा कार्य हो सकता है।'

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। कार्यक्रम के उपरान्त शिक्षक संगोष्ठी समायोजित हुई। संभागी शिक्षकों को परमपूज्य आचार्यप्रवर ने पावन पाथेय प्रदान किया। मध्याह्न में समायोजित कार्यक्रम में भी सैंकड़ों ग्रामीण समुपस्थित थे। पूज्यप्रवर से उन्हें पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। आचार्यवर के आह्वान पर ग्रामीणों ने संकल्प स्वीकार किए।

आज मध्याह्न में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के चौके की व्यवस्था की दृष्टि से नवनिर्मित वाहन के परिपार्श्व में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर ने परमपूज्य आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। श्री विजय एवं जयेश बड़ोला (दौलतगढ़-सूरत) श्री कोमलचन्द, किशोरकुमार, देवांशु भंसाली (जोजावर-सूरत) तथा श्री लिखमीचन्द, शेरसिंह, केशरीचंद, रमेश बोथरा (चूरू-सूरत) इस वाहन के सहयोगी के रूप में हैं।

सज्जन बनें

१० जून। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रातः मिथलेश्वर मौवाही से धनुषाधाम की ओर विहार किया। मार्गवर्ती पुरन्दाहा, ससीमपुर और मंगलपुर में यत्र-तत्र ग्रामीण समूह पूज्यवर के दर्शनार्थ खड़े थे। आचार्यवर ने उनके समीप चरण रोककर उन्हें पावन प्रतिबोध प्रदान किया। अनेकानेक लोग नशामुक्ति हेतु संकल्पित हुए। इस क्षेत्र में गांवों के आसपास यत्र-तत्र पोखर (तालाब) बने हुए हैं। स्थानीय लोग विविध कार्यों में इसके जल के उपयोग करते हैं। विहार के दौरान हवा वेग धारण किए हुए थी और सूर्य प्रायः निस्तेज सा प्रतीत हो रहा था। मार्ग में परशुराम तलाब के सन्निकट भूकंप के कारण धराशायी परशुराम की २५ फुट उंची प्रतिमा और तालाब में स्थित शिवलिंग तथा परिपार्श्व में निर्मित १०८ यज्ञ कुटीर राहगीरों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे।

आचार्यवर ने धनुषाधाम गांव में भी कई स्थानों पर अपने चरण रोककर ग्रामीणों को पावन प्रेरणा प्रदान की। अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। प्रवास स्थल के समीपस्थ धनुष मंदिर में पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ। किंवदंती है कि श्रीराम द्वारा स्वयंवर के दौरान तोड़े गए धनुष का एक टुकड़ा यहां आकर गिरा था। आचार्यवर ने मंदिर परिसर में मंगलपाठ का उच्चारण किया। ७.५ किमी का विहार कर आचार्यवर धनुषाधाम स्थित श्री धनुष जनता उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा–'आदमी जीवन एक प्रकार का कलश होता है। इस जीवनरूपी कलश को सद्गुण मुक्ताओं से भरने का प्रयास करना चाहिए। दुर्गुणों का कचरा उस कलश में न रहे। आदमी गुणों से सज्जन और दुर्गुणों से दुर्जन बनता है। दुर्जन के विद्या, धन और शक्ति क्रमशः विवाद, अहंकार और परपीड़ा के निमित्त बन सकते हैं, जबकि

सज्जन अपने विद्या, धन और शक्ति का उपयोग क्रमशः ज्ञान, दान और पररक्षा में करता है। आदमी आकृति से नहीं, प्रकृति से महान अथवा अधम बनता है, इसलिए चेहरे की अपेक्षा चरित्र पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। आदमी को सद्गुणों का ग्राहक बनना चाहिए। दूसरों की विशेषताओं को देखकर उन्हें ग्रहण करने का प्रयास व्यक्ति को सुजनता की ओर आगे बढ़ाता है। परम पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

रोज की एक सलाह का नेपाली अनुवाद लोकार्पित

कार्यक्रम में जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पूज्यप्रवर की लोकप्रिय कृति 'रोज की एक सलाह' का केलेण्डर के आकार में प्रकाशित नेपाली अनुवाद **'सधैंको एक सलाह'** जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धर्मीचन्द लूंकड़ और श्री मूलचन्द नाहर ने पूज्यवर को लोकार्पण के लिए भेंट किया। ज्ञातव्य है कि इस कृति का नेपाली अनुवाद समणी शारदाप्रज्ञाजी ने किया है। इस अवसर पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों की अवगति देने के उद्देश्य से प्रकाशित 'कामधेनु' पत्रिका भी पूज्यवर को भेंट की गई। जयपुर से समागत श्री नरेश मेहता ने अणुविभा द्वारा समायोजित 'नॉन वॉइलेंस एण्ड पीस' पर आधारित आठवीं इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स की रिपोर्ट पूज्यवर को भेंट की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा–'रोज की एक सलाह' नेपाली भाषा में अनूदित होकर आई है। नेपाली भाषी लोगों के लिए यह उपयोगी सिद्ध हो सकेगी। जैन विश्व भारती की गृहपत्रिका 'कामधेनु' में छह माह का विवरण प्रतीत हो रहा है। जैन विश्व भारती संस्थान का रजत जयंती वर्ष चल रहा है और जगह-जगह पर कार्यक्रम हो रहे हैं। जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान खूब आध्यात्मिक-शैक्षिक विकास करें। जैविभा के अध्यक्ष धर्मीचन्दजी लूंकड़ आए हुए हैं, ये भी खूब अच्छा कार्य करते रहें। सन् २०१४ में अणुविभा द्वारा जो इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स जयपुर-भीनासर में आयोजित हुई थी, उसकी रिपोर्ट का विशालकाय ग्रन्थ बन गया। सोहनलालजी गांधी इसके साथ जुड़े हुए हैं। पाठकों को इस ग्रंथ से जानकारी प्राप्त हो सकेगी। लोगों में अहिंसा का खूब प्रसार हो, यह काम्य है। अभातेयुप के अध्यक्ष अविनाशजी नाहर भी आए हुए हैं, ये भी अपने कार्य में लगे हुए हैं। आचार्य भिक्षु समाधिस्थल संस्थान के अध्यक्ष मूलचंदजी नाहर यहां उपस्थित हैं। ये यदा-कदा आते रहते हैं। ये भी खूब अच्छा कार्य करते रहें।'

मध्याह्न में समायोजित कार्यक्रम में भी धनुषाधाम के ग्रामीण सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुनि कमलकुमारजी का वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम के उपरान्त लोग पूज्यवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। आज प्रायः दिन भर तेज हवा बहती रही। आकाश में बादलों की उपस्थिति के कारण वह शीतलता लिए हुए थी। इस कारण मौसम भी गर्मी से प्रायः बचा रहा है, किन्तु हवा के साथ धूल का गुबार भी वातावरण में छाया रहा। मध्यरात्रि में हल्की वर्षा हुई।

सौभाग्य से मिलते हैं सद्गुरु और सुशिष्य

११ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः धनुषाधाम से धारापानी की ओर विहार किया। स्थानीय इंस्पेक्टर श्री सुभाष खड़का तथा सशस्त्र प्रहरी बल के इंस्पेक्टर श्री चिरंजीवी परसाई अपनी सीमा तक पूज्यवर की उपासना में साथ चले। श्री खड़का बोले–'बाबाजी की सेवा कर बहुत अच्छा लगा। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे ऐसा दुर्लभ अवसर मिला।'

मार्ग में किसानपुर, भगवानपुर, कुमरा और धारापानी के सैंकड़ों ग्रामीण पूज्यवर के दर्शन और पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। करीब बीस-पच्चीस स्थानों पर यत्र-तत्र खड़े ग्रामीण समूहों के पास पूज्यवर ने अपने चरण रोककर पावन प्रेरणा प्रदान की। कई ग्रामीणों ने नशे की बुराई को छोड़ने का संकल्प व्यक्त किया। किसानपुर का सोनेलाल शाह नामक व्यक्ति आचार्यवर के दर्शन कर बोला–'बाबा हमारे नेपाल

में शांति आएगी या नहीं? हमें इस संदर्भ में आपसे अपेक्षा है।' संभवतः उसके इस कथन का आशय संविधान निर्माण के संदर्भ में नेपाल के प्रमुख राजनैतिक दलों की पारस्परिक खींचातान से उपजी अशांति से था। पूज्यवर ने उससे कहा–'थोड़ी प्रतीक्षा करो और मन में मंगलकामना करो।' भगवानपुर स्थित श्री सनराईज इंग्लिश बोर्डिंग स्कूल तथा किसानपुर स्थित भानु उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को भी पूज्यवर से पावन प्रतिबोध प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से नशामुक्त रहने का संकल्प ग्रहण किया।

प्रायः पूरे विहार के दौरान आकाश मार्ग में बादलों का विहरण जारी रहा। सूर्य उनकी ओट में अदृश्य था और मन्द-मन्द शीतल हवा बह रही थी। इस कारण मौसम सुहावना बना हुआ था। मार्ग के दोनों ओर दूर-दूर तक फैले आम्रवन और सैंकड़ों आम्रवृक्षों पर लटकते अनगिनत आम राहगीरों को आकृष्ट कर रहे थे। कई पेड़ों की उंचाई ज्यादा नहीं थी और उन पर लटकते आम तो जमीन से मात्र कुछ इंच ऊंचाई पर थे। हजारों फलों के भार से नत बने हुए हरे-भरे पेड़ों को देखकर कवि की एक पंक्ति मानस पटल पर उभर रही थी--'वृक्षों की डाली से सीखो फल आए झुक जाना।' कुमरा का रामशरण यादव नामक व्यक्ति पानी से भरे एक बर्तन में दो आम लेकर पूज्यवर के दर्शनार्थ आया और आचार्यवर से उन आमों को ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा। उसे भिक्षा विधि की जानकारी दी गई। आचार्यवर १२.५ किमी का विहार परिसंपन्न कर धारापानी में पधारे। स्थानीय श्री उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज का प्रवास हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री रामदुलार यादव ने पूज्यचरणों का भावभीना स्वागत किया। वे अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बोले--'आज हमारे विद्यालय का स्वर्णिम दिन है। आप जैसे महापुरुष के चरण स्पर्श से हमारा विद्यालय धन्य हो गया।'

प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थी विद्यालय में पढ़ता है, वहां भी गुरु प्राप्त हो जाते हैं। गुरु से ज्ञान मिलता है। गुरु के दो प्रकार होते हैं–विद्यागुरु (शिक्षक) और धर्मगुरु (सद्गुरु)। स्वयं संसार सागर से तरते हुए जो दूसरों को भी तारने वाले हैं, उन्हें सद्गुरु के रूप में स्वीकार करना चाहिए। गुरु के अनुशासन में रहना चाहिए। जो गुरु के अनुशासन में रहते हैं, वे शिष्य विशिष्ट बन जाते हैं। सद्गुरु का एक भोजन है--शिष्यों का विनय। वह भोजन शिष्यों द्वारा गुरु को परोसा जाता है। कोई विनय करे या नहीं, गुरु तो अनाकांक्षी-आत्मार्थी होते हैं अथवा होने चाहिए। विनय करने वाले शिष्य का भला होता है। सुविनीत शिष्यों का मिलना गुरु का भाग्य होता है। सद्गुरु का योग मिलना शिष्यों का भाग्य होता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'जो गुरु ज्ञानी होने के साथ-साथ त्यागी भी होते हैं, वे सद्गुरु होते हैं। अनुयायियों का यह रूझान रहे सद्गुरु का हम पर प्रसाद रहे, कृपा रहे, महर नजर रहे। शिष्य को देखकर गुरु के चेहरे पर प्रसन्नता आए, इसका तात्पर्य है कि गुरु प्रसन्न हैं। गुरु आंख उठाकर देखें ही नहीं तो गुरु की अकृपा माननी चाहिए। गुरु का अपना कर्त्तव्य होता है और शिष्य का अपना कर्त्तव्य होता है। शिष्य का कर्त्तव्य होता है--गुरु की सेवा करना, उनकी आज्ञा में चलना। गुरु का कर्त्तव्य है--शिष्य की चित्तसमाधि, ज्ञान, विकास, प्रसन्नता आदि का ध्यान रखना। सारे गुरु एक समान नहीं होते। गुरुओं में भी तारतम्य हो सकता है। सबका ज्ञान भी एक समान न भी हो। ज्ञान और चारित्र के पर्यवो में भी अन्तर हो सकता है, पर गुरु तो गुरु ही होते हैं। अल्पवयस्क होते हुए भी गुरु विशिष्ट सम्मान्य होते हैं। अन्तर्दृष्टिसंपन्न गुरु का मिलना भी बड़े भाग्य की बात होती है।'

पूज्यवर ने प्रसंगवश ''तेरापंथ नायक तुलसी गुरुवर का गुरु उपकार है।' स्वचरित गीत का संगान किया। आचार्यवर ने समुपस्थित ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की। लोगों ने पूज्यवर की प्रेरणा से तीनों प्रतिज्ञाएं स्वीकार कीं। कार्यक्रम के पश्चात् स्थानीय शिक्षकों के लिए संगोष्ठी समायोजित हुई। संभागी शिक्षक आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। आचार्यवर से नशामुक्ति की प्रेरणा

प्राप्त कर प्रधानाध्यापक श्री रामदुलार यादव ने कहा--'हमारा परिवार पांच पीढ़ियों से मांस का सेवन नहीं करता है। मैं पिछले कई वर्षों से तम्बाकू बहुत खाता हूं, पर आज तक किसी ने इसे छोड़ने की प्रेरणा नहीं दी। आज आपने कह दिया तो मैं इसे यथाशीघ्र छोड़ दूंगा।'

मध्याह्न में समायोजित कार्यक्रम में शताधिक ग्रामवासी उपस्थित थे। भक्तिभाव से ओतप्रोत ग्राम्यजनों को परम पूज्यवर से पावन प्रतिबोध प्राप्त हुआ। लोगों ने आचार्यवर से उत्प्रेरित होकर अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

रसनेन्द्रिय संयम कठिन, किन्तु महत्त्वपूर्ण

१२ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः धारापानी से बन्दीपुर के लिए विहार किया। मार्गस्थ छघरिया, बिरेन्द्र बजार और गोदार में यत्र-तत्र खड़े ग्रामीणों के झुण्ड परम पूज्यवर की पावन प्रेरणा से लाभान्वित हुए। अनेक ग्रामीण नशामुक्ति हेतु कृतसंकल्प बने। मार्ग के परिपार्श्व में खड़े अनेक ट्रक चालकों ने भी आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्त बनने का संकल्प व्यक्त किया। कमला नदी और कमल नहर के ऊपर बने पृथक्-पृथक् पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुए। वेग के साथ बहता हुआ नदी का जल निर्मलता धारण किए हुए था। सुपर सेन्स उच्च माध्यमिक विद्यालय तथा बी.एस. निकेतन इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों को आचार्यवर से पावन आशीर्वाद प्राप्त हुआ। विहार के प्रारंभ में सूर्य सघन बादलों की ओट में अदृश्य था, किन्तु ज्यों-ज्यों वह उर्ध्वगमन करता जा रहा था, बादल छिन्न-भिन्न होते जा रहे थे। तेज हवा बादलों को गति प्रदान किए हुए थी, हवा की शीतलता सूर्य के आतप को कुछ मन्द बनाए हुए थी।

आचार्यवर ने मार्ग में धनुषा जिला की सीमा को पार कर सिरहा जिला में प्रवेश किया। सिरहा के मुख्य जिलाधिकारी श्री अबुल कलाम खान, एसपी श्री रामकृपालशाह तथा सिरहा जिला स्थित मिर्चैया के इंसपेक्टर श्रीहरि खतिवड़ा आदि ने इस अवसर पर पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। १२.५ किमी का विहार कर आचार्यवर बन्दीपुर स्थित श्री नेपाल राष्ट्रीय फूलकुमारी महतो उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शरीर को टिकाए रखने या चलाने के लिए हवा, पानी, भोजन ये प्रथम कोटि की अपेक्षाएं है। दूसरी कोटि की अपेक्षाएं हैं--वस्त्र और मकान। शिक्षा और चिकित्सा तीसरी कोटि की अपेक्षाएं हैं। प्रथम कोटि की अपेक्षाओं में से एक है भोजन। जीवन निर्वाह के लिए भोजन एक अनिवार्य तत्त्व है। भोजन का सम्बन्ध रसनेन्द्रिय से है। परमात्म तत्त्व को प्राप्त करने के लिए इन्द्रिय संयम जरूरी है। इन्द्रिय संयम महत्त्वपूर्ण साधना है। रसनेन्द्रिय संयम कठिन है। भोजन का संयम करने के लिए जरूरी है--

१. जिह्वास्वाद के लिए न खाएं। स्वाद के लिए खाना राग है। भोजन की प्रशंसा व निन्दा न करें, यथासंभव समता रखने का प्रयत्न करें।

२. भूख से ज्यादा मात्रा में भोजन न करें।

३. भोजन में जल्दबाजी न करें। चबा-चबा कर खाना भोजन की प्रशस्त विधि मानी गई है।

पूज्यवर ने आगे कहा--'शरीर साधना का साधन है उसे टिकाए रखने के लिए भोजन आवश्यक होता है। साधु के भोजन का उद्देश्य संयम संपोषण होना चाहिए। स्वाद के लिए खाना तो असंयम है। जीभ के लिए खाना योग नहीं भोग है। साधक के जीवन में योग होना चाहिए। आहार संयम भोग संयम है। रात्रिभोजन का त्याग आहार संयम का अच्छा प्रयोग है। रात्रि में चौविहार परित्याग न कर सकें तो तिविहार त्याग किया जा सकता है, पूर्णतया त्याग न हो सके तो आठ-नौ बजे के बाद खाने का भी त्याग किया जा सकता है। मांस, अण्डा से युक्त भोजन का परित्याग रखना चाहिए। शाक-सब्जी से काम चल

जाए तो सूअर, भैंसे, मुर्गे आदि का मांस क्यों खाएं? दूध, शरबत आदि मिलता है तो शराब क्यों पीएं? शराब त्याज्य पदार्थ है।

आदमी को मनोज्ञ चीजों का भी संयम करना चाहिए। भोजन में द्रव्यों की सीमा भी खाद्य संयम का एक प्रयोग है। मांसाहार और नशीले पदार्थों का तो सेवन होना ही नहीं चाहिए, शाकाहार में भी संयम रखना चाहिए। नवकारसी तप भी किया जा सकता है। दुनिया में ऐसे लोग भी मिलते हैं जो चौबीस घण्टों में एक ही बार भोजन-पानी ग्रहण करते हैं। एकान्तर तप करने वाले भी मिलते हैं। भोजन की उपलब्धि होने पर भी नहीं खाना साधना है।'

पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीणों को प्रतिबोध प्रदान कर अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करवाए। मध्याह्न में समायोजित कार्यक्रम में गत कई दिनों की भांति आज भी ग्रामीण लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। उन्हें परमाराध्य आचार्यवर से पावन प्रेरणा प्राप्त हुई। अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त कर ग्राम्यजनों ने आचार्यप्रवर से संकल्प स्वीकार किए।

वाणी विवेक अपनाएं

१३ जून। परमाराध्य आचार्यवर प्रातः बंदीपुर से मिर्चैया की ओर प्रस्थित हुए। विहार के प्रारंभ में आकाश मेघाच्छान्न था और हवा के वेग के अभाव में मौसम उमसभरा था। विहार के मध्य सूर्य रश्मियों ने बादलों को छिन्न-भिन्न करते हुए प्रखरता के साथ राहगीरों के तन को तप्त करना प्रारंभ कर दिया। कुछ समय बाद हवा के मन्द वेग का सहयोग लेकर बादलों ने सूर्य को पुनः अपनी ओट में लिया और मौसम सुहावना बन गया। मौसम के विविध रूपों के बीच भी महातपस्वी आचार्यवर समभाव लिए हुए गन्तव्य की ओर गतिमान थे। शनिवार के कारण विराटनगर, राजविराज, वीरगंज आदि क्षेत्रों से पहुंचे श्रद्धालु भी बड़ी संख्या में पूज्यवर की उपासना में यात्रायित थे। मार्गवर्ती कर्जनहा, बगहा, प्रयागपुर, और सिबुशाह के ग्रामीण समूहों ने आचार्यवर के दर्शन किए। पूज्यवर ने उन्हें पावन संबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से कई ग्रामीणों ने नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया।

१२.५ किमी का विहार कर परम पूज्य आचार्यवर मिर्चैया पधारे। अपने आराध्य को अपने गांव में पाकर स्थानीय तीन तेरापंथी परिवार अतिशय आह्लादित थे। उनकी प्रफुल्लित मुखाकृति पर उनकी आन्तरिक प्रसन्नता का ज्वार अभिव्यक्त हो रहा था। सगरमाथा उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज का प्रवास रहा। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री प्रदीपकुमार तिवारी ने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी मुख्यद्वार से प्रवास स्थल तक कतारबद्ध और करबद्ध खड़े होकर श्री चरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा—'२५० से अधिक वर्षों के इतिहास में प्रथम बार तेरापंथ के आचार्य नेपाल में पधारे हैं। नेपाल की जनता प्रसन्न है। राजस्थान के जो लोग नेपाल में रहते हैं, वे अत्यन्त प्रसन्न हैं। नेपाल की धरती का कण-कण आचार्यवर के विचरण से प्रसन्न है। मिर्चैया के लोगों ने कभी सपना भी नहीं देखा होगा कि हमारी आस्था के केन्द्र आराध्य देव यहां पधारेंगे। ऐसे महान संत के चरण जहां टिकते हैं, वह धरती और वहां के लोग धन्य हो जाते हैं। ऐसे महापुरुषों के दर्शन मात्र से तृप्ति मिलती है। उनके मुख से कुछ प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर मिल जाए तो 'सोने में सुहागा' वाली बात चरितार्थ हो जाती है। आप जैनाचार्य होते हुए भी जन-जन का कल्याण चाहते हैं। मिर्चैया के लोग परम पूज्य आचार्यप्रवर के एकदिवसीय प्रवास का पूरा लाभ उठाएं।'

परम श्रद्धास्पद आचार्यवर ने मंगल प्रवचन में कहा—'आदमी के जीवन में भाषा की बहुत उपयोगिता है। हमारा व्यवहार भाषा पर बहुत आधारित है। एक-दूसरे के विचारों को जानने का सशक्त माध्यम भाषा बनती है। मनुष्य की भाषा बहुत विकसित है। हमारी दुनिया में राष्ट्रों, प्रान्तों और क्षेत्रों की अपनी-अपनी

भाषाएं हैं। मेरे मन में प्रश्न उठता है कि इतनी भाषाओं का निर्माण क्यों हुआ। अगर विश्व की एक ही भाषा होती तो कितनी अनुकूलता हो जाती। एक भाषा हो जाती तो विचार संप्रेषण और ज्ञान विकास के लिए सुविधा हो जाती।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'बोलने में चार बातों पर ध्यान देना चाहिए--

१. मितभाषिता- आदमी को ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। वाचालता आदमी को छोटा और मौन उन्नत बनाती है। वाचालता सच्चाई की शत्रु है। मितभाषिता सच्चाई की सखी है। मितभाषी व्यक्ति अनेक प्रकार की समस्याओं से अनायास बच सकता है।

२. मधुरभाषिता- सत्य और प्रिय संभाषण वाणी की कला है। अप्रिय-सत्य और प्रिय-असत्य नहीं बोलना चाहिए। मधुरभाषिता तो मानों वशीकरण मंत्र है।'

३. यथार्थभाषिता- आदमी अयथार्थ न बोले। यथार्थ न बोल सके तो चुप रहना ज्यादा अच्छा है, पर झूठ नहीं बोलना चाहिए। यदि लक्ष्य बन जाए तो आदमी झूठ से काफी बच सकता है।

४. परीक्ष्यभाषिता- आदमी को बोलने से पहले विवेक करना चाहिए। बिना सोचे कोई बात नहीं बोलनी चाहिए।

बोलना सीखना जरूरी है तो चुप रहना भी जरूरी है। मौके पर बोलना व चुप रहना दोनों उपयोगी होते हैं। बोलने व न बोलने में विवेक रखना बड़ी बात होती है। जैन आगमों में वाणी पर विवेचन प्राप्त होता है। 'दसवेआलियं' के सातवें अध्ययन में वाणी का अच्छा विवेक दिया गया है। बात को व्यर्थ लम्बाकर सामने वाले का समय जाया नहीं करना चाहिए। आदमी मितभाषिता, मधुरभाषिता, यथार्थभाषिता और परीक्ष्यभाषिता इन चार तत्त्वों पर ध्यान देकर वाणी संयम और वाणी विवेक को आत्मसात् करने का प्रयास करें, यह काम्य है।'

पूज्यवर से प्रतिबोध पाकर कार्यक्रम में उपिस्थत प्रिंसिपल प्रदीप तिवारी सहित शिक्षकों, विद्यार्थियों और स्थानीय ग्रामीणों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

प्रवचन के पश्चात् शिक्षक संगोष्ठी का समायोजन हुआ। संभागी शिक्षकों को परमपूज्य आचार्यवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। प्रधानाध्यापक श्री प्रदीपकुमार तिवारी अपने विद्यालय में प्रवास करने हेतु पूज्यवर के प्रति भावविभोर होकर बार-बार कृतज्ञता अभिव्यक्त कर रहे थे। मध्याह्न में स्थानीय श्रद्धालु परिवारों को पूज्यवर की निकट समुपासना का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यवर का यह अनुग्रह श्रद्धालुओं को अतिशय आह्लादित करने वाला था।

तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्टतम श्रावक थे मूलचन्दजी बोथरा

गत २ जून को बीकानेर निवासी शासनसेवी श्री मूलचन्दजी बोथरा का अनशनपूर्वक देहान्त हो गया। उनके पारिवारिकजन संबल प्राप्ति हेतु आज पूज्यसन्निधि में समुपस्थित हुए। विहार के दौरान बोथरा परिवार ने पूज्यवर के दर्शन किए तो आचार्यवर ने मार्ग में कुछ क्षण विराजमान होकर परिजनों से मूलचन्दजी के अन्तिम समय का वृत्तान्त सुना। प्रातःकालीन कार्यक्रम में बोथरा परिवार के सदस्यों ने गीत का संगान किया। मूलचन्दजी की पौत्रवधू श्रीमती दीप्ति बोथरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि कमलकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन में शांति और आनंद की प्राप्ति के लिए जरूरी है--गुरु का मार्गदर्शन। गुरु सफलता का रहस्य बताते हैं। गुरु की प्राप्ति से धार्मिक जीवन शुरू होता है। मूलचंदजी बोथरा जन्म से तेरापंथी नहीं थे। उन्होंने तेरापंथ को समझकर तेरापंथ की श्रद्धा स्वीकार की। वे कहते थे मैं सौभाग्यशाली हूं मुझे ऐसा धर्मसंघ मिला, ऐसे गुरु मिले। गुरु क्या मिले, प्रकाश मिल गया। उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि उन्होंने अपने पूरे परिवार को संस्कारी बना दिया।

उन्होंने परिवार के प्रत्येक सदस्य को धर्म, धर्मसंघ और संघपति के प्रति निष्ठा और श्रद्धा के संस्कार दिए। इस परिवार के बच्चे-बच्चे में गुरुसेवा की ललक मानों हमेशा बनी रहती है। परिवार के लोग उनके संस्कारों को इसी रूप में आगे बढ़ाते रहें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'बीकानेर का बोथरा परिवार अपने परिवार के प्रमुख व्यक्ति मूलचन्दजी बोथरा के स्वर्गवास के उपलक्ष में परम पूज्य आचार्यवर की सेवा में उपस्थित हुआ है। मूलचन्दजी बोथरा गृहस्थ थे, किन्तु उनका जीवन साधु की तरह अनासक्त था। उन्होंने धर्म के तत्त्व को समझकर स्वीकार किया। उनकी आस्था बहुत गहरी थी। उनके पास ज्ञान का बल था तो उनका चरित्रबल भी उन्नत था। वे जितने श्रद्धाशील थे, उतने ही अनुशासनप्रिय भी थे। अपने परिवार पर उनका पूरा शासन था। ऐसा कहा जा सकता है कि मूलचन्दजी का परिवार आज के युग में एक उदाहरण है। उन्होंने अपने परिवार को ऐसे संस्कार दिए, जिससे उनके पुत्र-पुत्रियां और उनके परिवार अनुशासित जीवन जीते हैं। परिवार के लोग देव, गुरु और धर्म के प्रति आस्थावान तो हैं ही भौतिक वैभव के बीच रहकर सादगी का जीवन जीते हैं। मूलचन्दजी के त्याग-प्रत्याख्यान की एक लम्बी सूची थी। उनके कई त्याग विलक्षण थे, जो सामान्यतया किसी गृहस्थ के लिए कठिन होते हैं। जीवन के नवें दशक में भी वे प्रथम प्रहर तक अनाहार रहते थे। गंगाशहर नैतिकता के शक्तिपीठ पर उपासना का उनका नियमित क्रम था।'

मूलचन्दजी जब भी आते, उनके मन में एक बात रहती थी कि मेरा पूरा परिवार संस्कारी रहे, अनुशासित रहे। देव, गुरु और धर्म के प्रति श्रद्धा के संस्कार उन्होंने इस प्रकार अपने बच्चों में भरे कि उनके पुत्र, बेटियां और जंवाई भी सुसंस्कारों में ढले हुए हैं। प्रतिवर्ष पता नहीं कितनी ही बार गुरुदर्शन के लिए आते हैं और सेवा में उनको आनंद मिलता है। मूलचन्दजी का जीवन एक फड़दी की तरह है, उनकी जोड़ी का कोई दूसरा मिलना मुश्किल है। उन्होंने अन्तिम समय में जागरूक अवस्था में अनशन स्वीकार किया। इतना ही नहीं, उनकी भावना यह भी रहती थी कि मुझे अन्तिम समय में दीक्षा स्वीकार करने का सौभाग्य भी मिले। परम पूज्य आचार्यवर ने बहुत बड़ी कृपा करके दीक्षा की अनुमति भी प्रदान कर दी और हो सकता है कि उनकी भावना में साधुत्व आ भी गया हो, किन्तु व्यवहार में उन्हें वैसा मौका नहीं मिल सका। वे अष्टमाचार्य कालूगणी के समय से तेरापंथ धर्मसंघ से जुड़े हुए थे। उन्होंने परम पूज्य कालूगणी की उपासना की, आचार्य तुलसी की उपासना की, आचार्यश्री महाप्रज्ञ की और आचार्यश्री महाश्रमण की भी उपासना की। इस प्रकार चार-चार आचार्यों की सेवा करके उन्होंने अपने जीवन को धन्य बनाया। ऐसे श्रावकों का जीवन भी एक उदाहरण होता है, प्रेरणा होती है। उनके परिवार के लोग उनके पदचिन्हों पर चल ही रहे हैं और यही अपेक्षा है कि परम पूज्य आचार्यवर से विशेष आध्यात्मिक संबल प्राप्त कर मूलचन्दजी से प्राप्त आध्यात्मिक विरासत को और आगे बढ़ाएं तथा धर्मसंघ की सेवा के लिए जागरूक रहें।

परम पावन आचार्यवर ने इस अवसर पर अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'मूलचन्दजी बोथरा हमारे तेरापंथ धर्मसंघ के विशिष्टतम श्रावक थे, ऐसा कहना मुझे अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं लग रहा है। धार्मिक दृष्टि से भी उनका जीवन बहुत उन्नत था। ऐसे श्रावक संभवतः कम मिलते हैं, जिनके जीवन में इतना त्याग हो और धर्मसंघ व गुरु के प्रति इतना आत्मीयभाव हो। उन्होंने धर्मसंघ को किस रूप में अपनी सेवाएं दीं। एक समय था, जब वे जैन विश्व भारती के अध्यक्ष थे। आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान से भी वे जुड़े रहे। तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य भी वे बना दिये गए थे, तेरापंथ धर्मसंघ में जो एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। तेरापंथ की चार पीढ़ियों को देखने का, चार पीढ़ियों के शासनकाल में रहने का मौका उन्हें प्राप्त हुआ। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने उनके मकान में प्रवास किया था, आचार्य महाप्रज्ञजी के साथ उनका कितना संपर्क रहा और बाद में भी उनका संपर्क बना रहा। संपर्क ही नहीं, बहुत सघनता से धार्मिक संबंध बना रहा।'

मूलचन्दजी में कितना खाद्य संयम था, उनके त्याग-प्रत्याख्यान आदि तो विशेष थे ही, उनके पुत्रों के परिवारों में और पुत्रियों के परिवारों में भी जो धार्मिकता के संस्कार, धर्म की लगन और शालीनता देखने को मिलते हैं, वे अपने आप में विशिष्ट हैं। मूलचन्दजी तो धर्मसंघ के विशिष्टतम व्यक्ति लग ही रहे हैं, उनका परिवार भी विशिष्ट है, ऐसा कहा जा सकता है।

मूलचन्दजी बोथरा जैसे एक विशिष्ट व्यक्ति का देहावसान हो गया। उन्हें अन्त में संथारा भी आ गया पर दीक्षा का पाठ नहीं पचखाया जा सका। सुरेन्द्रजी, पद्मजी और संजयजी उनके पुत्र हैं। पुत्र, पुत्रियां, जवाई और उनके परिवार–इस प्रकार सारा बड़ा परिवार है। पूरे परिवार में संस्कार बने रहें, बढ़ते रहें। मूलचन्दजी का प्रभाव परिवार में बना रहे। मूलचन्दजी जैसे पिता, दादा, नाना का मिलना भी अपने आप में विशेष बात है। उनका परिवार धार्मिक दृष्टि से खूब फलता रहे, खूब अच्छी सेवा करता रहे। परिवार के लोग मूलचन्दजी के आदर्शों को सामने रखने का प्रयास करते रहें।'

उमड़ती, गरजती, कड़कती और बरसती मेघघटाओं के बीच गतिमान महासूर्य

१४ जून। मेघ घटाएं उमड़ रही थीं और मौसम उमसभरा था, किन्तु परम पावन आचार्यवर ने निर्धारित समय पर मिर्चैया से गोलबाजार की ओर प्रस्थान कर दिया। आचार्यवर ने ज्योंही विद्यालय परिसर से बाहर चरण रखे हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई और धीरे-धीरे वर्षा की गति बढ़ती गई। चूंकि वर्षा विहार के दौरान प्रारंभ हुई थी। इसलिए विहार को जारी रखने में कल्प की दृष्टि से बाधा नहीं थी। पूज्यचरण अस्खलित गति से गन्तव्य की ओर गतिमान थे। आचार्यवर ने निर्धारित विहार की करीब आधी दूरी को ही पार किया था कि वर्षा के बढ़ते वेग ने मूसलाधार रूप धारण कर लिया। घोर मेघगर्जना ओर कौंधती बिजलियां वातावरण को भयावह बना रही थीं, किन्तु अहिंसा यात्रा का कारवां निरंतर अग्रसर था अपनी मंजिल की ओर।

वेग धारण किए हुए बारिश की तीव्रता के साथ सड़क पर भी पानी का प्रवाह बढ़ता जा रहा था। पानी की बौछारें आचार्यवर के गात्र को भिगो रही थीं तो सड़क पर बहता बारिश का पानी मानों पूज्यचरण पखार रहा था, किन्तु महातपस्वी आचार्यवर का समत्वभाव निश्चल था। आगामी कुछ क्षणों में मूसलाधार वर्षा के थमने के आसार नजर नहीं आ रहे थे, ऐसे में मुनिवृन्द के अनुरोध पर पूज्यवर मार्गवर्ती न्यू चोहर्वा बस स्टेण्ड के छोटे से स्थान में कुछ देर रुके और विराजमान हुए। मुनिवृन्द और मार्गसेवारत कई श्रद्धालु भी इस स्थान में परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में खड़े हो गए। कुछ ही समय में बारिश और तेज हो गई। इस क्षेत्र के लोग इस मूसलाधार बारिश को बड़े बाबा के आगमन का ही चमत्कार मान रहे थे।

आचार्यवर ने संतो को फरमाया–'लोगों को तो इस बारिश से खुशी हो रही होगी ना।' संत बोले–'तहत्, मानसून की बारिश लोगों के लिए कई दृष्टियों से उपयोगी हो जाती है। इसलिए लोगों को खुशी होना स्वाभाविक है।'

आचार्यवर–'साधु को तो बारिश के होने अथवा न होने से न खुशी मनानी चाहिए और न ही दुःखी होना चाहिए। उसे बारिश होने की कामना भी नहीं करनी चाहिए और न ही बारिश के थमने की कामना करनी चाहिए।'

मुनिवृन्द ने पूज्यवर की प्रेरणा को सविनय स्वीकार किया। वर्षा हल्की मन्द पड़ी तो पूज्यवर ने वहां से प्रस्थान किया, किन्तु कुछ ही देर में वर्षा पुनः तेज हो गई। अब तो हवा भी कुछ वेग के साथ बहने लगी। हवा पानी को तीव्र वेग प्रदान कर रही थी तो पानी की बौछारें हवा को शीतल बना रही थीं। बिजलियों की कड़कड़ाहट और बादलों की गड़गड़ाहट भी जारी थी।

इस प्रकार प्रतिकूल मौसम में विहार करते हुए आचार्यवर गोलबाजार पधारे। प्रवास स्थल सड़क मार्ग से करीब पौन किमी भीतर स्थित था और वहां तक जाने वाला पथ कच्चा था। पूज्यचरण इस पथ पर गतिमान हुए। इस मार्ग में यत्र-तत्र तेज बहाव लिए हुए पानी बह रहा था। चिकनी मिट्टी पानी के योग से फिसलन की संभावना लिए हुए थी। पूज्यवर ने मुनिवृन्द को सावधानीपूर्वक चलने की प्रेरणा प्रदान की।

कुल ८.५ किमी का विहार संपन्न कर परम श्रद्धेय आचार्यवर गोलबाजार के सिरजाणा सैकेण्डरी इंग्लिश बॉर्डिग स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। गोलबाजार में तीन तेरापंथी परिवार निवास करते हैं। पूज्यवर का पावन पदार्पण उनके लिए किसी त्यौहार से कम नहीं था। अपने आस्थान को अपने मध्य पाकर उनका आस्थाभाव हिलौरे ले रहा था। आचार्यवर के पदार्पण के कुछ देर बाद बारिश क्रमशः मन्द होती हुई थम गई। मौसम और स्थान की प्रतिकूलता में भी पूज्यवर का नियमित प्रवचन करने का संकल्प अटल रहा और निर्धारित समय पर कार्यक्रम प्रारंभ हो गया।

श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया से युक्त हो श्रावक

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन शासन में चतुर्विध धर्मसंध है। जैन शासन रूपी प्रासाद के चार स्तम्भ हैं--साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका। जैन शासन में साधु का महत्त्वपूर्ण स्थान है और साध्वी का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधु-साध्वी गृहत्यागी होते है। श्रावक-श्राविका गृहस्थ होते हैं। श्रावक अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ श्रावक साधुओं के लिए माता-पिता के समान होते हैं, वे साधुओं की चिंता करते है, उन्हें भोजन-पानी आदि का नियमानुसार दान देते हैं, खुद ऊनोदरी करके भी दान करते हैं। साधुओं के प्रति वत्सलता का भाव रखते हैं। कई श्रावक भाई या मित्र के समान होते हैं। कई श्रावक सौत के समान भी होते हैं, वे साधुओं के प्रति दुर्भावना रखते है। श्रावक में श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया ये तीन गुण होने चाहिए। श्रावक अर्हत देव, निर्ग्रन्थ गुरु और जिनभाषित धर्म पर दृढ़ श्रद्धा रखे, यह काम्य है। उसमें जीव, अजीव आदि नव तत्त्वों का ज्ञान होना चाहिए। उसके जीवन में प्रत्याख्यान भी होना चाहिए। श्रद्धा, ज्ञान और क्रिया युक्त श्रावक सद्गति को प्राप्त होता है। श्रावक सामाजिक, पारिवारिक कार्य भी करता है, वहां सम्यक्त्व की हानि न हो, उसका ऐसा प्रयास होना चाहिए।'

पूज्यवर ने 'श्रावक व्रत धारो' गीत का आंशिक संगान करते हुए कहा--'श्रावक बारह व्रतों को धारण करने का यथासंभव प्रयास करे, यह वांछनीय है। गृहस्थ को यथासंभव त्याग की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। श्रावक का शाब्दिक अर्थ है--सुनने वाला। व्यर्थ बातें सुनने वाला नहीं, धर्म की बात सुनने वाला श्रावक होता है। संसार तो समुद्र हैं, इस समुद्र से पार उतरने का लक्ष्य होना चाहिए। संसार समुद्र से तैरने की विद्या सीखने वाला श्रावक होता है। श्रावक को ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करने का प्रयास करना चाहिए। अर्हन्नक जैसे दृढ़धर्मी श्रावक होने चाहिए। आनन्द आदि भगवान महावीर के दस श्रावक भी उल्लेखनीय हैं। आचार्य भिक्षु से लेकर अब तक तेरापंथ शासन में कितने-कितने श्रावक हुए हैं, जिन्होंने त्याग-प्रत्याख्यान की साधना, ज्ञानाराधना और साधु-साध्वियों, आचार्यों की सेवा उपासना की है। धर्मोपदेश सुनने से पाप निवृत्ति, साधु उपासना, ज्ञानवृद्धि, भाषण कला का प्रशिक्षण और समस्या का समाधान जैसे कई लाभ मिल सकते हैं।'

पूज्यवर ने प्रसंगवश कहा--'आज गोलबाजार में आएं है। गोल बाजार में श्रद्धा के परिवार भी रहते हैं। सबमें धार्मिक जागरणा बनी रहे।' आचार्यवर की प्रेरणा से समुपस्थित लोगों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

कार्यक्रम के दौरान बादल क्रमशः छंटते गए और वातावरण में धूप खिल उठी। जो सायंकाल तक

कमोबेश रूप में छाई रही। मध्याह्न में स्थानीय श्रद्धालुओं को आचार्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। यह दुर्लभ अवसर उनके जीवन की अमूल्य थाती बन गया।

स्मृति-संबल

- कोपरखेरना निवासी श्रीमती निर्मलादेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी-श्री अरविन्दजी चोरड़िया) का आकस्मिक दुर्घटना में देहान्त हो गया। वह धार्मिक रुचि वाली महिला थी। अपने बच्चों को उन्होंने धार्मिक संस्कारों से भावित किया। उनकी पुत्री कन्यामंडल की संयोजिका तथा पुत्र किशोरमंडल के प्रभारी के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। अरविन्दजी ने पत्नी के असामयिक निधन के पश्चात् किसी भी प्रकार की रूढ़ि को प्रश्रय न देकर अतिशीघ्र गुरुदर्शन कर आध्यात्मिक संबल प्राप्त किया। वे तेयुप को अपनी सक्रिय सेवाएं दे चुके हैं।
- मुसालिया निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती केलीबाई पीपाड़ा (धर्मपत्नी-स्व. चम्पालालजी पीपाड़ा) का ९३ वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। प्रतिदिन तीन-चार सामायिक करने वाली केलीबाई के पचास वर्षो से प्रतिदिन चौविहार व सचित्त परिहार का नियम था। प्रतिवर्ष श्रावण-भाद्रपद मास में एकान्तर एवं दीपावली पर तेले की तपस्या के साथ पखवाड़े की तपस्या की। गुरुदेव तुलसी की दक्षिण यात्रा (१९६८) से लेकर १९९५ तक प्रतिवर्ष सजोड़े आचार्यप्रवर की सेवा-उपासना का लाभ लिया। उनके लंबे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- मोमासर निवासी दिल्ली प्रवासी श्रीमती रायकंवरी पटावरी (धर्मपत्नी-स्व.बुधमलजी पटावरी) का सौ वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। वे ऋजुमना व धर्मपरायण श्राविका थीं। उन्हें अपने जीवन में चार आचार्यो के दर्शन-उपासना का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके प्रतिदिन तीन-चार सामायिक, स्वाध्याय, जप, चौबीसी संगान आदि का नियम था। साधु-साध्वियों की सेवा बहुत मनोयोग से करती थीं। अपने भरे-पूरे परिवार को उन्होंने धर्म के अच्छे संस्कार दिए। पूरा पटावरी परिवार संघनिष्ठ और शासनभक्त है।
- सुजानगढ़ निवासी गुलाबबाग प्रवासी श्रीमती इन्द्रादेवी डूंगरवाल (धर्मपत्नी-स्व.हनुमानमलजी डूंगरवाल) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वे संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था रखनेवाली श्राविका थीं। उनके सामायिक, स्वाध्याय, जप आदि का नित्यक्रम था। ९८ वर्ष की अवस्था में असह्य वेदना के प्रबल उदय को उन्होंने समभाव से सहन किया। अन्तिम समय में उन्हें समणीजी का आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हुआ। डूंगरवाल परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।
- चाड़वास निवासी, रायपुर-पूना प्रवासी श्रीमती तुलसीदेवी बच्छावत (धर्मपत्नी-श्री छत्रसिंहजी बच्छावत) का देहावसान हो गया। प्रतिदिन नियमपूर्वक सामायिक, स्वाध्याय करने वाली श्राविका तुलसी देवी ने छठे और सातवें दशक में असम में विचरण करने वाले साधु-साध्वियों की मनोयोग से मार्ग सेवा की। अपने जीवन में दो, पांच और आठ की मौन तपस्याएं कीं। उनका खाद्यसंयम विशिष्ट था। शारीरिक अस्वस्थता की स्थिति में उन्होंने वेदना को समभाव से सहन किया। चाड़वास के बच्छावत परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- बागड़ निवासी कुर्ला (मुम्बई) प्रवासी श्रीमती सुन्दरदेवी संचेती (धर्मपत्नी-स्व.भंवरलालजी संचेती) का देहावसान हो गया। वे सेवाभावी और सरलस्वभावी महिला थीं। पैंतालीस वर्ष की अवस्था में पति-वियोग के बाद उन्होंने पूर्णतया धार्मिक जीवन जीया। उन्होंने छह वर्षीतप, पन्द्रह तक की लड़ी तथा अनेक बेले-तेले आदि तप किए। कई वर्षो से तीन सामायिक तथा रात्रि भोजन परित्याग का नियम था। साध्वी केवलप्रभाजी एवं साध्वी प्रज्ञाश्रीजी उनके परिवार से दीक्षित साध्वियां हैं। पूरे संचेती परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

12 Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
Date of Publication : 22-06-2015 L.No.-U (C) 200/2015-2017
(Page 1-12) Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ की अनेक प्रमुख कृतियों के अनुवाद का कार्य प्रगति पर

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की पांच हिन्दी कृतियां--'दीये से दीया जले', 'नया समाज नया दर्शन', 'राजपथ की खोज', 'शिक्षा को बनाएं विकास और आनंद की दीक्षा' अब तक अंग्रेजी भाषा में अनूदित होकर आ चुकी हैं। 'समस्या का सागर : अध्यात्म की नौका', समता की आंख : चरित्र की पांख' तथा 'सन्मति का मतितंत्र' अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होकर इसी चतुर्मास में उपलब्ध हो जाएंगी। इनके अतिरिक्त परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ की भी अनेक कृतियों का अनुवाद कार्य प्रगति पर है। गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी पर प्रकाशित उनका समग्र साहित्य नई साज-सज्जा के साथ १०८ पुस्तकों के रूप में तथा आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण तथा साधु-साध्वियों द्वारा लिखित अनेकानेक महत्त्वपूर्ण पुस्तकें आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२ को अपना ऑर्डर भेजकर घर बैठे प्राप्त कर सकते हैं।

सुधारकर पढ़ें-

• अंक ५-- पृष्ठ-३ पर प्रकाशित 'पुलिस मुख्यालय के सुरक्षित स्थान में' शीर्षक के अंतर्गत तीसरी पंक्ति-- पूज्यवर मुख्यालय परिसर में स्थित अमर प्रहरी के समीप खुले मैदान में विराजमान हुए।

• अंक ६-- पृष्ठ-२ पर प्रकाशित 'अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन' शीर्षक के अंतर्गत चतुर्थ पंक्ति का अंश-- मुनि कमलकुमारजी ने छत्तीसवें वर्षीतप की संपन्नता के संदर्भ में.....।

• अंक ६-- पृष्ठ-४ पर प्रकाशित वर्षीतप करने वाले बहिर्विहारी साधु-साध्वियों की सूची में साध्वी संयमप्रभाजी (हांसी) तथा साध्वी मलयविभाजी (लाडनूं) का नाम भी ज्ञातव्य है।

• अंक ७-- पृष्ठ-११ पर प्रकाशित 'मार्ग अलग भले हों, पर मंजिल तक पहुंचाने वाले हों' शीर्षक की प्रथम पंक्ति-- नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री बाबूराम भट्टराई आज मध्याह्न में आचार्यवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

मुनि मलयजकुमारजी गणमुक्त

६ मई को मुनि मलयजकुमारजी (श्रीडूंगरगढ़-मुम्बई) गणमुक्त हो गए हैं।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

२१००/- स्वर्गीय राजकुमारजी संचेती (मोमासर-कटिहार) की पुण्य स्मृति में उनके भ्राता चन्दनमल, निर्मलकुमार, विनोदकुमार, अशोककुमार, विजयकुमार तथा सुपुत्र गौरव व निशान्त संचेती द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२। मोबाइल नं. +९७७ ९८०६२९६६३८, +९७७ ९८०६२९६६३९
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**